Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन परआधुनिकीकरण का प्रभाव

डॉ. रणजीत कुमार मीणा*

* सह आचार्य (समाजशास्त्र) राजकीय महाविद्यालय, ऋषभदेव, जिला उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – जहाँ तक जनजातीय क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के अंगीकरण का सवाल है, उन्हें आधुनिकीकरण को अपनाने में अभी भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं में यातायात के साधनों की कमी, शिक्षा एवं जागरूकता की कमी, आर्थिक पिछड़ापन एवं सिंचाई के साधनों का अभाव और कृषि उपज मण्डियों एवं बाजारों का दूर होना प्रमुख हैं। साथ ही जनजातियों के रूढ़िवादी एवं परम्परावादी दृष्टिकोंण के कारण स्थानीय संसाधनों के उपयोग का भरपूर दोहन न कर पाना कारण माना जा सकता है। राजकीय प्रयासों के परिणामस्वरूप लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें विशेषकर आधुनिकीकरण का अंगीकरण किया जाना जरूरी है। जनजातीय क्षेत्रों में जिन लोगों ने आधुनिकीकरण को अपनाया है, उन लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। फिर भी स्थानीय हाट बाजार न होने के कारण आर्थिक दशा में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य जिला उदयपुर का चयनित किया गया है।ग्रामीण जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत भील जनजाति के समस्त परिवारों को अध्ययन के समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु झाबुआ जिले की पाँच तहसीलों में से (प्रत्येक तहसील से 8 गांव) कुल 40 गांवों को दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इस हेतु सर्वप्रथम सभी तहसीलों के गांवों की सूची शहर से दूरी के आधार पर तैयार की गयी तत्पश्चात् 20 गांव शहर के नजदीक एवं 20 शहर से दूर स्थित गांवों का चयन दैव निदर्शन संख्या तालिका (Random Number Table) का उपयोग कर की गयी। अध्ययन में चयनित प्रत्येक गांव से 10 भील जनजाति के उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग कर 200 उत्तरदाता शहर के नजदीक के गांवों से एवं 200 उत्तरदाता शहर से दूर स्थित गांवों से कुल 400 उत्तरदाताओं को चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। वर्तमान समय में भील जनजाति को राजकीय स्तर पर विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं का लाभ प्रदान कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इन योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ प्राप्त कर भील जनजाति के लोग अपना सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास करने में सक्षम हो रहे हैं। जिसका इनके जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है। अत: हम कह सकते हैं कि भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ रहा है लेकिन आज भी ये लोग अन्य जातियों और जनजातियों की तुलना में विशेष रूप से पिछड़े हुये हैं।

शब्द कुंजी – आधुनिकीकरण, मुख्यधारा, राजकीय योजनाएँ, परम्परागत समुदाय, पिछड़ापन, हाट बाजार।

प्रस्तावना – जनजातियों की संस्कृति विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है। भील जनजाति भारत की पहली तथा राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति है। यह जनजाति उदयपुर के अतिरिक्त राजस्थान के डुंगरपुर, बॉसवाड़ा, प्रतापगढ़, राजसमंद और चित्तौड़गढ़आदि जिलों में भी निवास करती है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार उदयपुर जिले में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1,525,289 (49.7 प्रतिशत) है। इस दृष्टि से उदयपुर सर्वाधिक जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। भील जनजाति राजस्थान के अतिरिक्त मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, महाराष्ट्र तथा गुजरात में पायी जाती है।

विदेशी आक्रमणों के कारण जनजातीय समूह दूरस्थ पहाड़ों एवं निर्जन वनों में निवास करने लगे। प्रकृति से सामंजस्य व अनुकूलन स्थापित करते हुए वे सीमित संसाधनों का उपयोग कर, साथ ही कृषि व पशुपालन करके यह अपनी जीविकोपार्जन करने लगे। अंग्रेजी शासन काल में जमींदारी प्रथा के परिणामस्वरूप इनकी स्वतन्त्र सामाजिक व्यवस्था पर कुप्रभाव पड़ा। स्वतत्रता के पश्चात् अनुसूचित जनजाति के विकास के संवैधानिक प्रयास किय गये। उनके विकास के विशेष प्रयास कल्याणकारी राज्य द्वारा उठाये गये। देश में भूमि पर कार्य करने वाले भूस्वामी बने। भूस्वामी बनने के साथ ही सरकारी जमीन के पट्टे अपने नाम करने की प्रक्रिया आरम्भ हुयी जिससे जनजातिय लोगों को कृषि भूमि को अपने नाम कराने हेतु सरकारी कार्यालय जाना पड़ा। सरकार से जुड़ने के साथ वे नगरों व विकसित गांवों के साथ सम्पर्क स्थापित हुआ। जिसके कारण जनजातीय समूह शहरों में आने से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से परिचित हुआ।

आधुनिकीकरण से आशय – आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन हुए हैं, जिसके चलते सामाजिक और आर्थिक जीवन में अनगिनत परिवर्तन हुए हैं और यह परिवर्तन विश्व स्तर पर चल रहा है। इसी परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए समाज वैज्ञानिकों ने आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया है। कुछ लोगों ने आधुनिकीकरण को प्रक्रिया में माना है तो कुछ ने प्रतिफल के रूप में।

आइजनस्टेड ने इसे एक प्रक्रिया मानते हुए लिखा है,'ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया है जो कि सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में और बीसवीं तक दक्षिणी अमेरिकी, एशियाई व अफ्रीकी देशों में विकसित हुई।'

बैनेडिक्स ने बताया कि 1760-1830 में इगलैण्ड की औद्यागिक क्रांति तथा 1784-1794 में फ्रांस की क्रांति के दौरान आधुनिकीकरण पनपा।

ए. आर. देसाई ने आधुनिकीकरण को मानव को सभी क्षेत्रों में, विचारों में तथा क्रियाओं में होने वाले परिवर्तन की प्रक्रिया माना है।
जबकि **सक्सेना** इसे मूल्यों से जुड़ा प्रत्यय मानते हैं।

श्रीनिवास ने बताया कि आधुनिकीकरण किसी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क के कारण किसी गैर पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तन के लिए प्रचलित शब्द है।

श्यामचरण दुबे ने आधुनिकीकरण को वह प्रक्रिया बताया है जो परम्परागत या अर्द्ध-परम्परागत अवस्था से प्रोद्योगिकी को किन्हीं इच्छित प्रारूपों तथा उनसे जुड़ी हुई सामाजिक संरचना के स्वरूपों, मूल्यों, प्रेरणाओं एवं सामाजिक आदर्शों नियमों की ओर होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करती है।

जहाँ तक जनजातीय क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के अंगीकरण का सवाल है, उन्हें आधुनिकीकरण को अपनाने में अभी भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं में यातायात के साधनों की कमी, शिक्षा एवं जागरूकता की कमी, आर्थिक पिछड़ापन एवं सिंचाई के साधनों का अभाव और कृषि उपज मण्डियों एवं बाजारों का दूर होना प्रमुख हैं। साथ ही जनजातियों के रूढ़िवादी एवं परम्परावादी दृष्टिकोंण के कारण स्थानीय संसाधनों के उपयोग का भरपूर दोहन न कर पाना कारण माना जा सकता है। राजकीय प्रयासों के परिणामस्वरूप लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें विशेषकर आधुनिकीकरण का अंगीकरण किया जाना जरूरी है। जनजातीय क्षेत्रों में जिन लोगों ने आधुनिकीकरण को अपनाया है, उन लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। फिर भी स्थानीय बाजार न होने के कारण आर्थिक दशा में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है।

शोध प्रविधि -

अनुसंधान प्ररचना - प्रस्तुत अध्ययन में शोध उद्देश्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध प्ररचना का उपयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य - आधुनिकीकरण का भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना - प्रस्तुत शोध कार्य से भील जनजाति के जीवन पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का उनके सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

अध्ययन क्षेत्र - प्रस्तुत अध्ययन हेतु राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य जिला उदयपुर को चयनित किया गया।

अध्ययन कासमग्र - प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उदयपुर जिले के ग्रामीण जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत भील जनजाति के समस्त परिवारों को अध्ययन के समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की इकाई - प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उदयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत भील जनजाति के चयनित उत्तरदाता को अध्ययन की इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया है।

निदर्शन विधि - प्रस्तुत अध्ययन हेतु स्तरीकृत निदर्शन विधि का उपयोग कर उत्तरदाताओं को चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जो कि निम्न प्रकार है :-

तालिका 1 : उदयपुर जिले में उत्तरदाताओं का चयन

जिला उदयपुर (उद्देश्यपूर्ण विधि)					
चयनित तहसील (जनसंख्या विधि)					
सराड़ा	गिर्वा	ऋषभदेव	खैरवाड़ा	कोटड़ा	कुल गांव
112	240	110	256	95	813
चयनित गांव (निदर्शन संख्या तालिका Random Number Table)					
8	8	8	8	8	40
चयनित उत्तरदाता (कोटा पद्धति एवं उद्देश्यपूर्ण विधि)					
80	80	80	80	80	400

जिले का चयन - प्रस्तुत अध्ययन हेतु राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य जिला उदयपुर को उद्देश्यपूर्ण विधि के आधार पर चयनित किया गया।

तहसील का चयन - अध्ययन क्षेत्र उदयपुर जिले की तहसीलों जिनमें सराड़ा, गिर्वा, ऋषभदेव, खैरवाड़ा और कोटड़ा को जनसंख्या विधि के आधार पर चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

गांवों का चयन - प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उदयपुर जिले की पाँच तहसीलों में से (प्रत्येक तहसील से 8 गांव) कुल 40 गांवों को दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इस हेतु सर्वप्रथम सभी तहसीलों के गांवों की सूची शहर से दूरी के आधार पर तैयार की गयी तत्पश्चात् 20 गांव शहर के नजदीक एवं 20 शहर से दूर स्थित गांवों का चयन दैव निदर्शन संख्या तालिका (Random Number Table) का उपयोग कर की गयी।

उत्तरदाताओं का चयन - अध्ययन में चयनित प्रत्येक गांव से 10 भील जनजाति के उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग कर 200 उत्तरदाता शहर के नजदीक के गांवों से एवं 200 उत्तरदाता शहर से दूर स्थित गांवों से कुल 400 उत्तरदाताओं को चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

आँकड़ों का आधार एवं एकत्रण - प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोत - प्राथमिक स्त्रोतों का संग्रहण निर्मित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में जाकर उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क एवं साक्षात्कार, क्षेत्र का निरीक्षण एवं अवलोकन तथा समूह चर्चा के माध्यम से एकत्र किये गये। साक्षात्कार अनुसूची में अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्नों का समावेश किया गया।

द्वितीयक स्त्रोत - द्वितीयक स्त्रोतों के अन्तर्गत विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थ, सर्वेक्षण प्रतिवेदन, संस्मरण, यात्रा-वर्णन, पत्र डायरी, ऐतिहासिक प्रलेख, राजकीय आंकड़े अनुसंधान प्रतिवेदन, समाचार पत्र, पत्रिका, शोध पत्रिका, संबंधित सरकारी विभागों के वार्षिक प्रतिवेदन, इन्टरनेट, अप्रकाशित सामग्री, अनुसूचित जनजाति विकास विभाग, जनजाति अनुसंधान केन्द्र, जिला सांख्यिकी कार्यालय, एवं विभिन्न पुस्तकालय आदि से द्वितीयक स्त्रोत एकत्रित किये गये।

तकनीक एवं उपकरण - समंक एकत्रित करने हेतु अवलोकन पद्धति, समूह चर्चा, अनुसूची, साक्षात्कार पद्धति, एस.पी.एस.एस. (SPSS)

सारणीयन एवं फोटोग्राफी का उपयोग किया गया है।

विश्लेषणात्मक पृष्ठभूमि – आंकड़ों के संकलन के पश्चात् संग्रहित आंकड़ों की छंटनी करके, कम्प्यूटर में प्रविष्ट किया गया तथा एस.पी.एस.एस. (SPSS)पैकेज का प्रयोग करते हुऐ सारणीयन के पश्चात् विश्लेषण करके उपयुक्त निष्कर्ष निकाले गये हैं।

तालिका क्रमांक. 2 : उत्तरदाताओं के लिंग से सम्बन्धित जानकारी का विवरण

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पुरूष	269	67.25
2	महिला	131	32.75
	कुल योग	**400**	**100.0**

तालिका 2 में उत्तरदाताओं के लिंग से सम्बन्धित विवरण दिया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 67.25 प्रतिशत पुरुष पाये जबकि महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 32.75 पाया गया।

तालिका क्रमांक. 3: उत्तरदाताओं के उम्र से सम्बन्धित जानकारी

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	20 वर्ष से 40 वर्ष	95	23.75
2	40 वर्ष से 60 वर्ष	209	52.25
3	60 वर्ष से 80 वर्ष	60	15.00
4	80 वर्ष से अधिक	36	9.00
	कुल योग	**400**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदताओं में से सर्वाधिक 52.25 प्रतिशत उत्तरदाता 40 से 60 वर्ष आयु वर्ग के पाये गये जबकि सबसे कम 9 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जोकि 80 वर्ष या इससे अधिक आयु के थे। 23.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का आयु वर्ग 20 वर्ष से 40 वर्ष के बीच पाया गया वहीं 60 वर्ष से 80 वर्ष की आयु वर्ग के उत्तरदाताओं प्रतिशत 15 पाया गया।

तालिका क्रमांक. 4: उत्तरदाताओं के वैवाहिक स्थिति की जानकारी

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	अविवाहित	77	19.25
2	विवाहित	185	46.25
3	विधवा/विधुर	89	22.25
4	परित्यकता	49	12.25
	कुल योग	**400**	**100.0**

अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी जिसका विवरण उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत किया गया है। तालिका के विवरण से स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 46.25 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित पाये गये जबकि सबसे कम 12.25 प्रतिशत उत्तरदाता परित्यकत पाये गये। 22.25 प्रतिशत उत्तरदता विधवा और विधुर पाये गये वहीं 19.25 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित पाये गये। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण विलम्ब से विवाह का प्रचलन बढा है। साथ ही विधवा/विधुर और परित्यक्ता के प्रतिशत वृद्धि सामाजिक व्यवस्था में हो रहे परिवर्तन को दर्शाता है।

तालिका क्रमांक. 5: उत्तरदाताओं के शिक्षा के स्तर सम्बन्धित जानकारी

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	प्राथमिक	85	21.25
2	माध्यमिक	60	15.0
3	अक्षरी ज्ञान	99	24.75
4	निरक्षर	156	39.0
	कुल योग	**400**	**100.00**

उत्तरदाताओं की शिक्षा से सम्बन्धित जानकारी का विवरण तालिका 5 में प्रस्तुत किया गया जिसके विवरण से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 21.25 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक तक की शिक्षा ग्रहण किये हुए हैं 15 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक तक की शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। 24.75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनको केवल अक्षरी ज्ञान है वहीं सबसे अधिक 39 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जोकि निरक्षर थे।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि यातयात के साधन गैर जनजाति लोगों के सम्पर्क में आने से शिक्षा के प्रति जागरुकता आई है जिससे शिक्षा के स्तर में सुधार आया है। इसके विपरीत शहरों से दुरस्थ क्षेत्रों में निवासरत जनजाति समुदाय में शिक्षा का स्तर आज भी कम है।

तालिका क्रमांक. 6: उत्तरदाताओं परिवारों का मुख्य व्यवसाय

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कृषि	192	48.00	134	33.50
2	व्यवसाय	12	3.00	53	13.25
3	नौकरी	19	4.75	46	11.50
4	मजदूरी	177	44.25	167	41.75
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

स्वतन्त्रता की मात्रा = 3 5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।

काई-वर्ग (X^2) = 84.701 सारणी मान = 7.815

उपर्युक्त तालिका में उत्तरदताओं के मुख्य व्यवसाय की जानकारी का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पूर्वजों के समय मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य था जबकि सबसे कम 3 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय करते थे। 44.25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी था वहीं 4.75 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी करते थे।

वर्तमान समय में सर्वाधिक 33.75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी पाया गया जबकि सबसे कम 11.5 प्रतिशत उत्तरदाता मुख्य व्यवसाय के रूप में नौकरी करते हैं। 33.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मुख्य व्यवसाय कृषि पाया गया वहीं 13.25 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय करते हैं।

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 3 स्वतन्त्रता की मात्रा के लिए काई-वर्ग (X^2) का सारणी मान 7.815 है जो परिकलित मान 84.701 से अत्यधिक कम है इसलिए कहा जा सकता है कि काई-वर्ग (X^2) सार्थक है। अत: दोनों पूर्वजों के समय उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय एवं वर्तमान समय में उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय सम्बन्धित है स्वतन्त्र नहीं। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

अत: तालिका से स्पष्ट होता है कि पूर्वजों के समय और वर्तमान समय में कृषि कार्य और मजदूरी कार्य में कमी हुई है वहीं व्यवसाय और नौकरी के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण वर्तमान समय में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार पाया गया है एवं शिक्षा प्राप्त कर भील जनजाति के लोगों व्यवसाय एवं नौकरी के प्रति रूचि बढ़ रही है।

निष्कर्ष – उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भील जनजाति को राजकीय स्तर पर विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं का लाभ प्रदान कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इन योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ प्राप्त कर भील जनजाति के लोग अपना सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास करने में सक्षम हो रहे हैं। जिसका इनके जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है। अत: हम कह सकते हैं कि भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ रहा है लेकिन आज भी ये लोग अन्य जातियों और जनजातियों की तुलना में विशेष रूप से पिछड़े हुये हैं।

सुझाव – भील जनजाति क्षेत्रों में विकास के लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार किये जाने की आवश्यकता है साथ ही महिलाओं की शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु ग्राम स्तर पर समितियाँ बनाकर महिलाओं को शिक्षा महत्व के प्रति जागरुक बनाया जा सके। भील जनजाति लोगों के लिए संचार व तकनीकी ज्ञान का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. भारतीय जनगणना 2011, District Census Hand Book जिला उदयपुर, राजस्थान।
2. बेनडिक्स आर0 (1967) ट्रडिशन एण्ड मॉडर्निटी रिकंसीडर्ड, कम्पेरेटिव स्टडीज इन सोसायटी एण्ड हिस्ट्री, वॉल्यू - 9 पृ. क्र. 326
3. देसाई ए. आर. (1971) एसेज ऑन माडर्नाईजेशन ऑफ अन्डरडेवलप्ड सोसायटीज, वाल्यु - 1,ठक्कर एण्ड कबाम्बे,पृ. क्र. 32
4. सक्सेना आर. एन. (1972) मॉडर्नाईजेशन एण्ड डेवलपमेण्ट ट्रेन्ड्स इन इण्डिया, सोशियोलॉजीकल बुलेटिन, वाल्यु - 21
5. श्रीनिवास एम. एन. (1956) सोशल चेंज इन मॉडर्न इण्डिया, एलाईड पब्लिशर्स, बाम्बे, पृ. क्र. 50
6. दुबे एस. सी. (1971) एक्सपेंशन एण्ड मैनेजमेण्ट ऑफ चेंज, टाटा मैग्रा हिल, नई दिल्ली, पृ. क्र. 67-68

****